*कान्यकुब्ज(कन्नौज) का इतिहास : एक परिचय

कान्यकुब्ज (कन्नौज) का इतिहास बहुत ही समृद्ध और गौरवशाली है। यह प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण नगर रहा है। इसका उल्लेख रामायण, महाभारत और पुराणों में भी मिलता है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर :

प्राचीन नाम और उत्पत्ति:

कन्नौज का प्राचीन नाम कान्यकुब्ज था। कुछ स्थानों पर इसे महोदया भी कहा गया है। वाल्मीकि रामायण, महाभारत और विभिन्न पुराणों में इसका प्राचीन नाम कान्यकुब्ज मिलता है। बाद में इसे कन्नौज के रूप में जाना जाने लगा।

पौराणिक कथा:

पौराणिक कथाओं के अनुसार, कान्यकुब्ज की स्थापना राजा पुरु के पुत्र और ऋग्वैदिक ऋषि विश्वामित्र के वंशज अमावसु ने की थी। एक अन्य कथा के अनुसार, यहाँ की राजकुमारी के पिता का नाम कुशनाभ था और उनकी सौ सुंदर कन्याएँ थीं। उन कन्याओं पर एक राजा आसक्त हो गया था, पर राजकुमारियों ने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया। इस पर क्रोधित होकर उस राजा ने उन कन्याओं को कुब्जा (कूबड़ वाली) बना दिया। बाद में उन्हीं के नाम पर कान्यकुब्ज नाम पड़ा।

इतिहास:

कन्नौज का इतिहास कई युगों में फैला हुआ है। यहाँ कई शक्तिशाली राजवंशों ने शासन किया, जिनमें मौर्य, गुप्त, वर्धन, गुर्जर-प्रतिहार, गहड़वाल आदि प्रमुख हैं। हर्षवर्धन के समय में कन्नौज एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था। इस शहर ने भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सांस्कृतिक महत्व:

कन्नौज प्राचीन काल से ही शिक्षा, कला और संस्कृति का केंद्र रहा है। यहाँ कई प्रसिद्ध विद्वान, कवि और कलाकार हुए हैं। इत्र के लिए भी कन्नौज विश्व प्रसिद्ध है।

प्रमुख शासक:

कान्यकुब्ज ने कई प्रतापी शासकों का शासन देखा है, जिनमें कुछ प्रमुख हैं:

* हर्षवर्धन * यशोवर्मा * मिहिरभोज * जयचंद

कान्यकुब्ज एक महत्वपूर्ण नगर था और कई राजवंशों की राजधानी रहा।इनमें से कुछ प्रमुख राजवंश इस प्रकार हैं:

* मौखरी वंश: मौखरी वंश गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में उभरने वाला एक शक्तिशाली राजवंश था। इस वंश ने कन्नौज (कान्यकुब्ज) को अपनी राजधानी बनाया और उत्तर भारत में एक मजबूत शक्ति के रूप में उभरा। मौखरियों का संबंध पहले गुप्तों के सामंतों से था, लेकिन बाद में वे स्वतंत्र हो गए।

*पुष्यभूति वंश: 606 ई. में हर्षवर्धन (पुष्यभूति वंश) ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कान्यकुब्ज स्थानांतरित की।हर्ष के शासन में कान्यकुब्ज भारतीय राजनीति और संस्कृति का केंद्र बन गया।प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसे एक समृद्ध और भव्य नगर बताया है।

हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद कान्यकुब्ज पर कई राजवंशों ने अधिकार के लिए संघर्ष किया।गुर्जर-प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट वंशों के बीच इसे जीतने के लिए "त्रिपक्षीय संघर्ष" चला।

* गुर्जर-प्रतिहार वंश: 8वीं से 10वीं शताब्दी तक गुर्जर-प्रतिहार वंश ने कन्नौज पर शासन किया। उन्होंने कन्नौज को एक शक्तिशाली और समृद्ध नगर बनाया।

* राष्ट्रकूट वंश: 9वीं शताब्दी में कुछ समय के लिए राष्ट्रकूट वंश ने भी कन्नौज पर अपना नियंत्रण रखा।

* पाल वंश: 10वीं शताब्दी में पाल वंश ने कन्नौज पर शासन किया।

* गहड़वाल वंश: 11वीं और 12वीं शताब्दी में गहड़वाल वंश ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश के अंतिम शासक जयचंद थे, जिन्हें मुहम्मद गोरी ने हराया था।

कन्नौज का इतिहास भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। इस नगर ने कई शक्तिशाली राजवंशों के उत्थान और पतन को देखा है।

वर्तमान स्थिति:

वर्तमान में कन्नौज उत्तर प्रदेश का एक जिला है। यह अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है।

निष्कर्ष:

कान्यकुब्ज (कन्नौज) का इतिहास भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक महत्व इसे एक विशेष स्थान प्रदान करते हैं।